ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14
Vol.-5, No.-I, PP-89-92, YEAR JUNE 2016

आधुनिकता का ग्रामीण महिलाओ पर प्रभाव

❑ डॉ0 निर्मला देवी

समस्त विश्व के प्राणियों को जीवन, आवास, औषधि तथा अन्य जीवनदायी तत्व प्रदान करने वाली प्रकृति मानव समाज का पालना है। आदिम युग में प्रकृति तथा मनुष्यों का गहरा सम्बन्ध रहा है। यह हमारे विकास यात्रा की साक्षी तथा सहभागी रही है, इसने अपने अमूल्य संसाधनों से हमारे समाज को विकसित एवं समृद्धि करके जीवन को नवीन आयाम प्रदान किये हैं।

व्यक्ति अपनी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समूहों का निर्माण करता है और समूहों की अर्न्तनिर्भरता समुदायों का तथा विभिन्न समुदायों, संस्थाओं का विकास समाज में होता है।

ग्रामीण जीवन में आधुनिकता के कारण आज अनेक ऐसी स्थितियाँ पैदा हो गयी है जिनके प्रभाव से ग्रामीण परिवारों की संरचना और कार्यों में परिवर्तन होने लगे हैं। गाँवों के संयुक्त परिवारों के सदस्य रोजगार के लिए शहरों में आकर बसने लगे हैं। इससे परिवार में संयुक्त रूप के स्थान पर एकांकी रूप उभरकर सामने आने लगा है। संयुक्त परिवार के सदस्य का जीवन जब एकाकी परिवार के रूप में शहर में शुरू हो जाता है तो विवाह, धर्म, सम्पत्तिकर्त्ता का एकाधिकार आदि सभी का रूप बदल जाता है। बच्चों के समाजीकरण, शिक्षा एवं विवाह से सम्बन्धित निर्णयों में अब परिवार के बड़े–बूढ़ों का दबाव कम हो गया है तथा उसके स्थान पर युवा सदस्यों के प्रभाव में वृद्धि हुई है।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि तीव्र गति से ग्रामीण समाज की बदलती हुई आवश्यकताओं, आर्थिक उदारीकरण एवं विकास की अनवरत् प्रक्रिया ने ग्रामीण सामाजिक संरचना को तेजी से बदलने का प्रयास किया है। सामाजिक परिवर्तन में ग्रामीण समाज का केवल पुरुष समाज ही नहीं अपितु ग्रामीण महिलाओं पर भी इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। इस प्रभाव के कारण गाँव की न केवल ब्राह्य संरचना में परिवर्तन आ रहा है। अपितु लोगों के दृष्टिकोण विचार भावनायें एवं सम्बन्ध भी बदलते नजर आ रहे हैं। यह सब औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं वैश्वीकरण का परिणाम है, जिसने आधुनिकीकरण को जन्म दिया। ग्रामीण आधुनिक पर्यावरण में महिलाएँ अब पहले की अपेक्षा स्वतन्त्र महसूस कर रही है। धीरे–धीरे राजनीति एवं सत्ता में उनकी भागीदारी बढ़ती जा रही है, पारिवारिक संस्था में भी उनकी भूमिका नजर आने लगी है। आर्थिक परिस्थितियों पर भी उन्होंने पकड़ बनाना शुरू कर दिया है। अतः खान–पान, पहनावा, विचार व्यवस्था, दृष्टिकोण आदि सभी में किसी न किसी रूप में आधुनिकता झलकने लगी है। धीरे–धीरे ग्रामीण परम्परायें, प्रथायें एवं मर्यादायें कमजोर पड़ती जा रही है और उनके स्थान पर आधुनिकता का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लगा है। जो महिलाओं के जीवन स्तर को ऊँचा करने एवं सशक्त बनाने के लिए अपरिहार्य है किन्तु प्राचीन संस्कृति इस प्रक्रिया से हमारे धार्मिक आधार, संस्कार एवं मूल्यों पर संकट प्रतीत होता है।

अतः आज के परिवर्तनशील युग में ग्रामीण महिलाओं में आधुनिकता के प्रभाव का विस्तृत अध्ययन किया जाना आवश्यक हो जाता है, जिससे ग्रामीण महिलाओं में हो रहे बदलावों का वास्तविक ज्ञान–विद्वानों के समक्ष आ सके और समाज की महत्वपूर्ण संकल्पनाओं एवं समस्याओं को यथा रूप समझा जा सके। अतः ग्रामीण समाज एवं आधुनिकता की सही समझ हेतु प्रस्तुत शोध कार्य एक

❑ असि0 प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर डिग्री कॉलेज, बांदा (उ0प्र0) भारत

समसामयिक विषय है। मुझे विश्वास है कि यह शोध कार्य उक्त विषय पर गम्भीर प्रकरणों को समझने में लघु पूर्ति करेगा।

उद्देश्य :प्रत्येक अध्ययन किसी न किसी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है। शोध छात्रा ने भी अपने अध्ययन के कुछ महत्वूर्ण उद्देश्य बनाए है जो निम्न हैं–

1. उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण महिलाओं में आधुनिकता से ग्रामीण समाज के बदलते स्वरूपों की पहचान करना।
3. ग्रामीण महिलाओं में आधुनिकता से होने वाले बदलाव के कारणों का अध्ययन करना।
4. ग्रामीण महिलाओं में आधुनिकता के प्रभावों का अध्ययन करना।
5. ग्रामीण महिलाओं में आधुनिकता केदुष्प्रभावों से ग्रामीण सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना को बचाये रखने के लिए सुझाव प्राप्त करना।

परिकल्पना :

1. पश्चिमीकरण, वैश्वीकरण एवं आधुनिकीकरण से महिलाओं के रहन सहन में बदलाव आ रहा है।
2. आधुनिकीकरण से ग्रामीण महिलाओं के भी पारिवारिक रिश्तों में बदलाव आ रहे हैं।
3. आधुनिकीकरण के प्रभाव से महिलाओं एवं उनके परिवारों की संस्कृति में बदलाव हो रहा है।
4. सम्प्रेषण एवं संचार माध्यमों ने महिलाओं को आधुनिकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।
5. आधुनिकता के प्रभाव से महिलाओं के दृष्टिकोण एवं मनोवृत्तियों में बदलाव आया है।

शोध क्षेत्र का चयन : शोध कार्य हेतु बाँदा जिले के बबेरू विकासखण्ड के ग्रामीण क्षेत्र का चयन किया गया है। इस जिले के गाँव में विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के लोग निवास करते हैं। गाँव में सभी जातियों, वर्ग एवं धर्म के लोग भी पाये जाते हैं। अतः इस जिले का ग्रामीण क्षेत्र विविधता से पूर्ण है। इस जिले के ग्रामीण क्षेत्र की सभी जाति, वर्ग एवं धर्म की महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाली एवं समस्त ग्रामीण संस्कृति के स्वरूप को प्रदर्शित करती है। अतः यह जिला शोध विषय में शोध कार्य हेतु उपयुक्त पाया गया है।

तालिका संख्या – 01

परिवार की स्त्रियों का घर के बाहर नौकरी/जीविकोपार्जन के आधार पर वर्गीकरण

क्र.सं.	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	70	28.00
2	नहीं	67	26.80
3	कहीं–कहीं पर	113	45.20
	योग	250	100.00

अतः स्पष्ट है कि आधुनिकता के प्रभाव से परिवार की अधिकांश महिलायें घर से बाहर नौकरी/जीविकोपार्जन के लिये जाने लगी है।

तालिका संख्या – 02

महिलाओं की स्वतंत्रता एवं समानता प्राप्ति के आधार पर वर्गीकरण

क्र.सं.	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	78	31.20
2	नहीं	52	20.80
3	थोड़ी बहुत	120	48.00
	योग	250	100.00

अतः स्पष्ट है कि सर्वाधिक रूप से ग्रामीण महिलाओं ने स्वीकार किया कि उन्हें स्वतन्त्रता एवं समानता

तालिका संख्या – 03
आधुनिकता के प्रभाव से परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों का विरोध करने के आधार पर वर्गीकरण

क्र.सं.	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	38	15.20
2	नहीं	40	16.00
3	कहीं कहीं पर	97	38.80
4	विशेष परिस्थितियों में	75	30.00
	योग	250	100.00

अतः स्पष्ट है कि आधुनिकता के प्रभाव से सर्वाधिक ग्रामीण महिलायें पुरानी परम्पराओं एवं रीति रिवाजों का विरोध करने लगी हैं।

तालिका संख्या – 04
ग्रामीण महिलाओं में पुरुषों के प्रति बदलाव के आधार पर वर्गीकरण

क्र.सं.	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	दृष्टिकोण एवं भावनाओं में	66	26.40
2	विचारों में	35	14.00
3	व्यवहार में	22	8.80
4	सम्बन्धों में	24	9.60
5	उपर्युक्त सभी में	103	41.20
	योग	250	100.00

अतः स्पष्ट है कि आधनिकता के कारण महिलाओं में पुरुषों के प्रति भिन्न–भिन्न रूपों में बदलाव देखने को मिल रहा है।

तालिका संख्या – 05
शिक्षा के स्तर में सुधार से आधुनिकता में वृद्धि के कारणों का वर्गीकरण

क्र.सं.	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	आत्म विश्वास के कारण	99	39.60
2	दूसरे से अलग दिखना	71	28.40
3	पुरुष वर्ग को आकर्षित	15	6.00
4	प्रतिस्पर्धा	36	14.40
5	महत्वाकांक्षा एवं अहंकार	29	11.60
	योग	250	100.00

अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा के स्तर में वृद्धि से आधुनिकता के बढ़ने के लिये आत्मविश्वास एवं दूसरे से अलग दिखने को विशेष कारण स्वीकार किया।

निष्कर्ष : 73.20 प्रतिशत महिलायें अब घर से बाहर नौकरी/जीविकोपार्जन करने को किसी न किसी रूप में स्वीकार कर रही हैं। 79.20 प्रतिशत महिलायें यह मानती हैं कि आधुनिकता से उनकी स्वतन्त्रता एवं समानता प्राप्त करने में मदद मिल रही है। 84 प्रतिशत महिलाओं में 15.20 प्रतिशत महिलायें खुलकर, 38.80 प्रतिशत कहीं–कहीं पर एवं 30 प्रतिशत महिलायें विशेष परिस्थितियों में आधुनिकता के प्रभाव से ग्रामीण परम्पराओं एवं रीति रिवाजों का वरोध करने लगी हैं।आधुनिकता के प्रभाव के कारण अधिकांश ग्रामीण महिलाओं में पुरुषों के प्रति भिन्न–भिन्न रूपों में बदलाव देखने को मिल रहा है। 68 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने स्वीकार किया कि आधुनिकता के प्रभाव से महिलाओं में आत्मविश्वास एवं दूसरे से अलग दिखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। आधुनिकता के प्रभाव से पारिवारिक सम्बन्धों में यह स्वीकार कर रही है कि पर्दा प्रथा धीरे–धीरे समाप्त हो रही है एवं व्यक्तिवादी सोच बढ़ रही है तथा अन्य कारण भी सम्बन्धों के बदलाव के लिए जिम्मेदार हैं। सर्वाधिक 76 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने यह सुझाव दिये कि आधुनिकता के प्रभाव से ग्रामीण संरचना को बचाये रखने के लिए आधुनिकता की सीमाओं को निर्धारित करने एवं ग्रामीण सामाजिक संस्थाओं को मजबूत करना आवश्यक है।

सुझाव : आधुनिकता के प्रभाव से ग्रामीण परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों को बचाये रखने हेतु ग्रामीणजनों को संस्कारित एवं जागरुक करना आवश्यक है।ग्रामीण सामाजिक मूल्यों और मर्यादाओं में आधुनिकता के प्रभाव से हो रहे क्षरण को रोकने के लिए नयी पीढ़ी को विशेष रूप से शिक्षित एवं अनुशासित करने की जरूरत है। गाँव में हो रहे तेजी से परिवर्तन एवं विकास तथा आधुनिकता के प्रभाव से ग्रामीण सामाजिक संरचना को बचाये रखने के लिए गाँव की पहचान एवं इसके महत्व के प्रति महिलाओं में लगाव एवं हमदर्दी बढ़ाकर ग्रामीण सामाजिक संरचना को मजबूत करने की आवश्यकता है। महिलाओं में आधुनिकता के प्रभाव से ग्रामीण सांस्कृतिक संरचना को सुरक्षित रखने हेतु ग्रामीण संस्कृति की अच्छाइयों

को प्रेरणादायी तरीके से प्रचार–प्रसार करने की जरूरत है। शादी के तुरन्त बाद नयी पीढ़ी की महिलाओं द्वारा एकाकी परिवार के प्रति बढ़ रहे लगाव से संयुक्त परिवार की संरचना को बचाये रखने हेतु महिलाओं की व्यक्तिवादी सोच एवं स्वार्थ के प्रति उन्हें शिक्षित एवं जागरुक करना उचित होगा। गाँव में बढ़ रहे मोबाइल, टी.वी., डी.वी.डी., कम्प्यूटर एवं इंटरनेट आदि प्रौद्योगिकी संसाधनों के दुष्प्रभावों से ग्रामीण समाज की संचेतना को जागृत करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दोषी एस.एल. (2002) ''आधुनिकता, उत्तर–आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धांत'', रावत पब्लिकेशन जयपुर एवं नई दिल्ली,
2. दोषी एस.एल. (2002) ''आधुनिकता, उत्तर–आधुनिकता एवं नव–समाज शास्त्रीय सिद्धांत'', रावत पब्लिकेशन जयपुर एवं नई दिल्ली,
3. देसाई नीरा, ठक्कर ऊषा (2008), 'भारतीय समाज में महिलाएँ' नेहरू भवन 5, बसंत कुंज इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज–2, बसंत कुंज, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।
4. देसाई नीरा, मैत्रेयी (1987), ''वूमेन एण्ड सोसाइटी इन इंडिया'' अजंता पब्लिकेशन, दिल्ली।
5. पाण्डेय डॉ. रविप्रकाश (2011), ''वैश्वीकरण एवं समाज'' शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. श्रीवास्तव, डॉ0 राजीव कुमार ''वैश्वीकरण एवं समाज'' वैभव लक्ष्मी प्रकाशन, वाराणसी 2012–2013

*****